

चदरिया झीनी रे झीनी

कबीरा जब हम पैदा हुए,
जग हँसे, हम रोये ।
ऐसी करनी कर चलो,
हम हँसे, जग रोये ॥

चदरिया झीनी रे झीनी
राम नाम रस भीनी
चदरिया झीनी रे झीनी

अष्ट-कमल का चरखा बनाया,
पांच तत्व की पूनी ।
नौ-दस मास बुनन को लागे,
मूरख मैली किन्ही ॥
चदरिया झीनी रे झीनी...

जब मोरी चादर बन घर आई,
रंगरेज को दीन्हे ।
ऐसा रंग रंगा रंगरे ने,
के लालो लाल कर दीन्हे ॥
चदरिया झीनी रे झीनी...

चादर ओढ़ शंका मत करियो,
ये दो दिन तुमको दीन्हे ।
मूरख लोग भेद नहीं जाने,
दिन-दिन मैली कीन्हे ॥
चदरिया झीनी रे झीनी...

ध्रुव-प्रह्लाद सुदामा ने ओढ़ी चदरिया,
शुकदे में निर्मल कीन्हे ।
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी,
ज्युँ की त्यूं धर दीन्हे ॥
के राम नाम रस भीनी,
चदरिया झीनी रे झीनी ।

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1027/title/chadariya-jhini-re-jhini-ram-nam-ras-bheeni>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |